

## Class XII (Hindi)

### 50 Sure Shot Question-Answer

#### हन्दिी परश्नोत्तर

- (1) 'दनि जल्दी-जल्दी ढलता है' कवति के आधर पर बताइए कबिच्चे कसि आशर में नीडों से झँक रहे होंगे ?
- (2) 'जन्म से ही वे अपने साथ लरते हैं कपस' यहाँ कपस और बच्चों में संबंघ बताया गयर है?
- (3) 'कैमरे में बंद अपरहजि' कवति कर संदेश अपने शब्दों में लखिए।
- (4) 'उषर' कवति में उषर की सुन्दरतर को कवने कौन-कौनसे उपमरन देकर दरशरयर है?
- (5) 'कवति के बहरने' कवति में कवने कवति और बच्चों में क्यर समरनतर तरर असमरनतर बताई है ?
- (6) फ़रििक की गज़ल में प्रेम एवं सौन्दर्य कर चत्तिरण कैसे करियर गयर है?
- (7) कवर्यरंश को पढ़कर उसकर भरव-शलिप सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए ।  
हँसते हैं छूटे पौधे लघुभरर  
शस्य अपरर  
हलि हलि  
खलि खलि  
हरथ हलिते  
तुझे बुलरते।  
वप्लिव-रव से छूटे ही है शोभर पारते।
- (8) **प्ररत नभ तर बहुत नीलर शंख जैसे**

भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका

( अभी गीला पड़ा है )

बहुत काली सलि जरा से लाल केसर से

कजैसे धुल गई हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक

मल दी हो किसी ने ।

1) कविति में आए उपमा अलंकार के दो उदाहरण लिखिए।

2) कविति की भाषा-शैली की तीन विशेषताएं लिखिए ।

(9) 'चाँद के टुकड़े' का प्रयोग किसके लिए हुआ है और क्यों ?

(10) 'कविति के बहाने' कविति में कविने कविति और फूलों में क्या समानता तथा असमानता बताई है ?

(11) 'कैमरे में बंद अपाहजि' कविति मीडिया की क्रूरता को दर्शाती है।कैसे?

(12) जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं -कपास-यहाँ कपास और बच्चों में क्या समानता बताई गई है ?

(13) किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

जाने क्या रशिता है,जाने क्या नाता है

जतिना भी उड़ेलता हूँ,भर-भर फ़रि आता है

दलि में क्या झरना है ?

मीठे पानी का सोता है

भीतर वह,ऊपर रुम

मुस्काता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर

मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खलिता वह चेहरा है।



(28) पहलवान अपना गुरु कसि मानता था और उसे गुरु मानने के क्या कारण रहे होंगे ?

(29) 'पहलवान की ढोलक' कहानी के आधार पर लिखिए कि पहलवान के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

(30) लुट्टन पहलवान की ढोलक का पूरे गाँव पर क्या असर पड़ता था? (इ)

(31) जीजी ने इन्दर सेना पर पानी फेंके जाने को कसि तरह सही ठहराया?

(32) इन्दर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है ? नदियों का भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है ?

(33) चार्ली चैप्लिन का भारतीय संस्करण कसि कहा गया है और क्यों ?

(34) लेखक ने कालजयी अवधूत कसि कहा है और क्यों ?

(35) 'मानचित्र पर एक लकीर खींच देने से जमीन और जनता बँट नहीं जाती है' - उचित तर्कों एवं उदाहरण देकर समझाइए।

(36) अंबेडकर के मत से मनुष्य की क्षमता कनि बातों पर निर्भर करती है?

(37) चार उदाहरण देकर समझाइए कि 'सल्वर वेडगि' कहानी में दो पीढ़ियों के अन्तराल को उभारा गया है। कैसे?

अथवा

'सल्वर वेडगि' कहानी दो पीढ़ियों की सोच, मूल्यों और भावनाओं के अन्तराल को दर्शाती है। पाठ के आधार पर लिखिए।

(38) चार्ली चैप्लिन की फ़िल्मों की विशेषताएं लिखिए।

(39) 'चटाई का लहंगा' कसि कहा गया है और क्यों ?

(40) 'जूझ' कहानी के शीर्षक की सार्थकता को लेखक आनंद यादव के जीवन के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(41) श्री सौदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिन्होंने आनंद यादव को कविता के प्रति आकर्षित किया ।

(42) 'जूझ' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए ।

(43) 'जूझ' के लेखक की कौन-कौनसी विशेषताएं आपको प्रभावित करती हैं और क्यों ?

(44) क्या सन्धिघाटी सभ्यता जल-सभ्यता थी ? यदि हां, तो कैसे ?

(45) 'सन्धि सभ्यता का सौन्दर्य-बोध समाज-पोषति था'- 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

(46) सन्धिघाटी सभ्यता के मोहनजोदड़ो शहर की विशेषताएं लिखिए ?

(47) 'सन्धि-सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्य-बोध है जो राज-पोषति या धर्म-पोषति न होकर

समाज-पोषति था।' ऐसा क्यों कहा गया है ?

(48) 'डायरी के पन्ने' के आधार पर बताए कि युद्ध के समय यहूदियों के प्रति जिन-भावना कैसी थी ?

अथवा

'डायरी के पन्ने' में द्वितीय विश्व-युद्ध में जर्मनी सेना के द्वारा यहूदियों पर किए गए अमानवीय अत्याचार को बारीकी से उभारा गया है।' इस कथन के पक्ष में तर्क दीजिए।

?

(49) ऐन फ्रेंक कौन थी और उसकी डायरी क्यों प्रसिद्ध हुई ?

(50) 'ऐन फ्रेंक की डायरी लेखिका के नज्दी जीवन की उलझनों के साथ-साथ ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज है।' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$

## परश्नोत्तर

1 बच्चे नीड़ों से झांक रहे होंगे कऱ उनके माता-पतिा शाम को घर आएंगे और उन्हें दाना-पानी खल्लिएंगे -पल्लिएंगे तथा ढेर सारा प्यार देंगे। सुबह से उन्हें छोड़कर गए उनके माता- पतिा उन्हें पाकर खुश भी होंगे।

2 कपास बहुत हल्की,मुलायम,गद्देदार और चोट सहने में समर्थ होती है। यही गण बच्चों में भी होते हैं। वे हल्के-फुल्के,कोमल,छरहरे और चोट सहने में समर्थ होते हैं।

3 'कैमरे में बंद अपाहजि' कवतिा करुणा के व्यापारियों पर तीखा व्यंग्य है। मीडियाकर्मी अपने चैनल को लोकप्रयि बनाने के लएि जानबूझकर लोगों के जख्म कुरेदते हैं। वे अपाहजि की मजबूरी को,उनकी दीनता और दुःख को जान-बुझकर उभारते हैं ताकऱ लोग उन्हें देखने के लएि चैनल से चपिके रहें। वास्तव में कसिी अपाहजि के भूले हुए दर्द से अपना धंधा चलाना अत्यंत घनिौना और क्रूर कर्म है।मीदयिा की घोर व्यावसायकिता को उभारा गया है जो समाज हटि के नाम पर अपना हटि तथा स्वार्थ पूरा करता है ।

4 कवऱ के अनुसार प्रातः का उगता सूर्य अपनी लालमिा नीले आसमान ऐसे बखिर रहा है जैसे नीले शंख में लाली हो,जैसे काली सलि पर सनिदूर बखिर दयिा गया हो,जैसे कसिी स्लेट पर बच्चे ने लाल खड़यिा मल दी हो,जैसे रात का लीपा हुआ आँगन अभी तक गीला पड़ा हो।

5) 'कवतिा के बहाने' कवतिा में कवऱिने कवतिा और बच्चों में नमिनांकति समानता तथा असमानता बताई है - समानताएं - बच्चे प्रत्येक घर में खेलकूद सकते हैं ,वैसे ही कवतिा भी हर घर में खेल / पढ़ी जाती है। बच्चों की भांतऱकवतिा भी सभी को आनंद प्रदान करने वाली होती है। असमानताएं - बच्चों के खेलकूद की कोई सीमा नहीं होती है लेकनि कवतिा की और उसके पढ़ने की सीमा होती है ।

6 फ़रिक गोरखपुरी की दृष्टिमें प्रेम और सौन्दर्य मन की पवतिर भावन्न तथा नजर है और इसे अनुभूत कयिा जा सकता है न कऱ अभवियक्त। कवऱ अपनी प्रयिा की याद में रात-दनि रोता रहता है। प्रेम-सौन्दर्य अमर है।

7 भाव-सौन्दर्य- नरिला बादलों को बरसने का नविदन करते लखिते है कऱिे बादलों ! तुम्हारे गरजने और बरसने से इस धरती में दबे पड़े छोटे-छोटे बीज ही अंकुरति होकर धरती की हरयिाली बढ़ाते हैं। बारशि से वे ही शोभा पाते हैं और खलि-खलिकर,हलि-हलिकर वे ही अपने सौन्दर्य -अस्मतिा पर इतराते हैं। अर्थात गरीबों-मजदूरों का ही उद्धार होता है।

शिल्प-सौन्दर्य- भाषा-खड़ीबोली हन्दिदी है जसिमें संस्कृत शब्दों की बहुलता है।स्थरि बम्बिबों,ध्वन्यात्मक बम्बिबों तथा नवीन प्रतीकों का प्रयोग हुआ है। खलि-खलिकर,हलि-हलिकर में पुनरुक्ति है। वप्लिव-रव-क्रांतिका तथा छोटे पौधे= गरीबों-मजदूरों के प्रतीक है।

8 'नीले शंख' और 'राख से.....गीला पड़ा है' में उपमा अलंकार है। अत्यंत छोटे शब्दों-नील,शंख,राख-का सार्थक प्रयोग मौलुक कल्पना और नवीन उपमानों के साथ हुआ है।चत्त्रिण में बम्बिब-वधिन और चत्त्रिात्मकता की अद्भुत शक्त है।भाषा खड़ीबोली हन्दिदी है।

9 'चाँद के टुकड़े' का प्रयोग माँ की गोद में लेटे बच्चे के अद्वितीय मुखड़े के लिए हुआ है क्योंकि वह चाँद की तरह हमेशा नदिग और खलिकलिकर हँसता रहता है,सबका प्रयि है।

10 'कवति के बहाने' कवति में कविने कवति और फूलों में नमिनांकति समानता तथा असमानता बताई है - समानताएं - फूल प्रत्येक जगह तथा बगीचे में महकते हैं तथा सभी को सुगंध देते हैं ,वैसे ही कवति भी हर घर में खेल / पढ़ी जाती है और सभी को फूलों की भांति कवति भी आनंद प्रदान करने वाली होती है। असमानताएं - फूल महककर तथा महकाकर कुछ समय बाद मुरझा जाते हैं लेकिन कवति को पढ़ने और उसके आनंद की कोई सीमा नहीं होती है । वह जीवनभर लोगों को महकाती रहती है ।

11 'कैमरे में बंद अपाहजि' कवति करुणा के व्यापारियों पर तीखा व्यंग्य है। मीडियाकर्मी अपने चैनल को लोकप्रयि बनाने के लिए जानबूझकर लोगों के जख्म कुरेदते हैं। वे अपाहजि की मजबूरी को,उनकी दीनता और दुःख को जान-बुझकर उभारते हैं ताकलोग उन्हें देखने के लिए चैनल से चपिके रहें। वास्तव में कसिी अपाहजि के भूले हुए दर्द से अपना धंधा चलाना अत्यंत घनिौना और क्रूर कर्म है।

12 कपास बहुत हल्की,मुलायम,गद्देदार और चोट सहने में समर्थ होती है। यही गण बच्चों में भी होते हैं। वे हल्के-फुल्के,कोमल,छरहरे और चोट सहने में समर्थ होते हैं।

13 क) 'दलि में क्या झरना है ? मीठे पानी का सोता है-का लाक्षणकि अर्थ है-दलि में प्रेम की मठिस इतनी भरी है कबिार-बार झरने के रुप में झरती रहती है,कम नहीं होती,अनवरत बहती रहती है।

ख) धरती के ऊपर जैसे चाँद की चाँदनी बखिरी रहकर उसे उजाला और प्रेम देती है ,वैसे कविके मन पर उसकी प्रेमकि की प्रेम-चाँदनी का पहरा बना रहता है।

ग) मुस्काता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर -उत्प्रेक्षा अलंकार

मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खलिता वह चेहरा है।

14 हनुमान का आगमन करुणा में वीर रस का अवतार कहा गया है क्योंकि लक्ष्मण के शक्ति-बिण लगने पर राम और सम्पूर्ण वानर-सेना करुणा तथा नरिशा में डूबे होते हैं कअब तक हनुमान संजीवनी लेकर नहीं आए।लेकनि अचानक हनुमान संजीवनी बूटी लेकर राम के चरणों में झुकते हैं तो लक्ष्मण के जीवति होने की आशा प्रबल हो उठती है और सभी में जोश आ जाता है।

15 चमकते लच्छे भाई की कलाई पर बहन द्वारा बाँधे गए धागों को कहा गया है जो अँधेरी रात में भी बजिली की तरह चमक रहे हैं। चमकते लच्छे का संबंध रक्षाबन्धन के त्योहार से है। जैसे बजिली चमककर अंधेरे में रास्ता दिखाती है वैसे ही भाई की कलाई पर बंधी राखी चमककर अच्छाई और विश्वास का रास्ता दिखाती है।

16 -'छोटा मेरा खेत' कागज के चोकोर टुकड़े का प्रतीक है। जसि प्रकार खेत चोकोर होता है जसिमें फसल उगाई जाती है, वैसे ही कागज का टुकड़ा भी चोकोर होता है जसि पर कवति के अक्षर लिखे जाते हैं।

17 तुलसीदास ने दरदिरता को आततायी रावण के समान बताया है क्योंकि दरदिरता दनि-प्रतदिनि बढ़ती ही जा रही है।इससे लोग भूखों मर रहे हैं और परेशान हैं।जैसे रावण के अत्याचारों से जनता त्रस्त रहती थी वैसे ही गरीबी के कारण तदयुगीन जनता त्रस्त है।

18 -'छोटा मेरा खेत' कागज के चोकोर टुकड़े का प्रतीक है। जसि प्रकार खेत चोकोर होता है जसिमें फसल उगाई जाती है वैसे ही कागज का टुकड़ा भी चोकोर होता है जसि पर कवति के अक्षर लिखे जाते हैं।

19 'वप्लव के वीर' और 'जीवन के पारावार' बादलों को कहा गया है,क्योंकि बादल जल-प्लावन लाकर सूखे का वनिश करते हैं और धरती के गर्भ में सोए हुए अंकुरों को नया जीवन प्रदान करते हैं।

20 कविपाठकों की आँखों के सामने पतंग के रुप,रंग तथा भार को साकार करने के लिए,उनका ध्यान आकर्षण करने के लिए पतंग को सबसे हलकी,सबसे रंगीन,सबसे पतला और सबसे पतली विशेषणों का प्रयोग करता है।

21 कविने अपने सुख-दुख की अनुभूति, गिर्बीली गरीबी, गहरे अनुभव, प्रौढ़ वचन, व्यक्तित्व की दृढ़ता, नूतन भावनाओं का बहता हुआ प्रवाह, अपने प्रयत्न का प्रेम आदि सहर्ष स्वीकारा है।

22 'हम समर्थ शक्तविन' में व्यंग्य है कि मीडिया वाले सवयं को बहुत शक्तिशाली और सबका भाग्यवधाता मानते हैं। अन्य अर्थ में यह अपंग की तुलना में सामान्य आदमी का प्रतीक है। 'दुर्बल को लाएँगे' का अर्थ है कठिया, लाचारी और प्रदर्शन का भाव होना। मीडिया वाले दुर्बल, अपंग, अपाहजि को सबके सामने लाकर उसका तमाशा बनाएँगे, उस पर टीका-टिप्पणी करेंगे।

23 महादेवी की सेविका भक्तनि सेवा भावी, ममत्व भरी, आदर, समर्पण से पूरण, लेखिका का ख्याल रखने वाली है। लेकिन वह कठोर, कर्कश, दुराग्रही, कुछ चोर अवभाव, और दुराग्रह से परंपूर्ण भी है। हमें भक्तनि की सेवा भावना, पवत्रिता, सहयोगी भावनाएँ अच्छी लगीं।

24 भक्तनि के जीवन को चार परच्छेदों/अध्यायों में बाँटा जा सकता है- एक - वह गोपालक की कन्या थी और उसका नाम लक्ष्मी रखा गया था कि वह जीवन भर सुखी तथा सम्पन्न रहेगी। सौतेली माँ ने बचपन में ही उसकी शादी करावा दी। दूसरा - शादी के बाद वह ससुराल में रहकर तीन कन्याओं की माँ बनी और देवरानी - जेठानी तथा सास के अवांछित अत्याचार सहें। तीसरा - उसने कठोर मेहनत की। अपनी बेटियों की शादी करवा दी। मेहनत से वह सुखी रहने लगी। उसके सुखों से सभी चढ़ने लगे और उसे कष्ट देने लगे। उसकी जठिनी के भाई ने लक्ष्मी की वधिवा बेटे के साथ मुंह काला किया। उधर पंचायत ने दोनों की शादी करवा दी। चौथा - लक्ष्मी घरबार छोड़कर इलाहाबाद लेखिका के यहां आ गई सेविका बनाकर और सेवक-भाव से लेखिका की सेवा करने लगी।

25 'जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का वरिधाभास लेकर जीना पड़ता है।' उदाहरण - भक्तनि का नाम लक्ष्मी था लेकिन उसे जीवन भर अभावों, कष्टों और गरीबी में जीना पड़ा। हमारे पड़ोस में रानी लामक लड़की भीख मांगकर अपना जीवन चला रही है। शांतिनाम की लड़की उसके नाम के विपरीत एकदम अशांत और महाक्रोधी है।

26 बाजार का जादू - आदमी बाजार की आकर्षक वस्तुओं के वश में हो जाता है, उसे कहा गया है और उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य बहुत प्रभाव पड़ता है, जैसे - बाजार का जादू चढ़ने पर आदमी बाजार की आकर्षक वस्तुओं के वश में हो जाता है। वह लालच में आकर गैर जरूरी चीजों को खरीदता चला जाता है। परंतु जब जादू उतरता है तो उसे पता चलता है कि वह वस्तुएँ उसे आराम देने की बजाय उसके आराम में खलल डाल रही हैं और उसने पैसा फालतू बहाया।

27 बाजार को सार्थकता भगतजी जैसे संतोषी प्रवृत्तिके लोग दे सकते हैं। जो बाजार से पंसेरी की दुकान पर जाकर आवश्यक सामान ले आते और बाकी सामान बछि का बछि रह जाता है। हमें बाजार जाते समय घर में आवश्यक चीजों की सूची तैयार कर देनी चाहिए ताकि बाजार में जाकर भीड़ न बढ़ाए और जरूरी चीजें लेकर आए।

28 लुट्टन पहलवान डोलक को ही अपना गुरु मानता था क्योंकि बिचपन से लेकर पहलवान बनने तक एकमात्र डोलक ही उसकी साथी रही है। डोलक की थाप और आवाज की उटठापटक के साथ ही लुट्टन ने दाँव-पेंच काटना सीखा। डोलक की आवाज ही उसके लिए कुश्ती-पहलवानी का प्रेरणा स्रोत रही है, जैसे-ढाक -ढनिा, ढाक ढनिा, ढाक -ढनिा अर्थात उठाकर पटक दे, उठाकर पटक दे, उठाकर पटक दे। चटधा गड़िधा, चटधा गड़िधा, चटधा गड़िधा अर्थात आजा भड़ि जा, आजा भड़ि जा, आजा भड़ि जा। तरिकट तनिा तरिकट तनिा अर्थात दाँव काटो बाहर हो जा ,दाँव काटो बाहर हो जा आदि।

29 माता-पति की मृत्यु के बाद वह अनाथ हो गया और उसका पालन-पोषण वधिवा सास ने किया। श्यामनगर दंगल में चाँदसहि को कुश्ती में पछाड़कर वह राज-दरबार का स्थायी पहलवान बना। 15 वर्ष बाद राजा की मौत के बाद राजकुमार ने उसे दरबार से हटा दिया और वह अपने गाँव लौट आया। कुछ दिनों गाँववालों ने भारण -पोषण का दायित्व लेकर बाद में हाथ खींच लिया। अपने पुत्रों की मौत के चार-पाँच दिनि बाद वह भी मृत्यु को प्राप्त हुआ।

30 लुट्टन पहलवान की डोलक का पूरे गाँव पर असर पड़ता था । डोलक की आवाज से रात का सन्नाटा और भय कम होता था। महामारी से पीड़ित अधमरे-से लोगों की नसों में एक उत्तेजना-सी फैल जाती थी। बूढ़े-बच्चे-जवान सभी की आँखों के सामने दंगल का दृश्य और उत्साह नाचने लगता था। मरने वालों को मौत से डर नहीं लगता था, वे आराम से मर जाते थे। इस प्रकार डोल की आवाज उनके जीवन के कष्टों को कम कर देती थी।

31 जीजी ने इन्द्र सेना पर पानी फेंके जाने को एकदम सही ठहराया। जीजी की मान्यता थी कि देवता से कुछ पाने के लिए पहले कुछ दान और कुछ त्याग करना पड़ता है। कसिन पाँच-छह सैर अनाज बीज के रुप में त्यागता है, तब उसे खेतों में से 30-40 मन अनाज प्राप्त होता है। इसी तरह इन्द्र सेना को पानी देने से इन्द्र भगवान प्रसन्न होंगे और धरती पर झमाझम बारिश करेंगे। अतः इन्द्र सेना पर पानी फेंकना एकदम उचित है।

32 इन्द्र सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलती है क्योंकि गंगा भारतीय समाज और जीवन के धर्म का मूल आधार है, वह मोक्षादत्री है, पालनहारी है और है जीवनदायिनी। भारतीय समाज में नदियों को मां माना जाता रहा है क्योंकि वि माँ के समान ही हमारा जीवन सँवारती

है,जविन को सरस बनाती है,खेतों को सींचती है,हमारे पीने-नहाने-धोने का पानी उपलब्ध कराती है।अमारी मौत के बाद भी नदियों में हमारी अस्थियां मोक्षार्थ प्रवाहति की जाती है आदि।

33 चार्ली चैप्लिन का भारतीयकरण राजकपुर को कहा गया है क्योंकि चार्ली की अनेक फ़िल्मों को राजकपुर ने भारतीय परविश में ढालकर बनाया और दर्शकों के बीच लोकप्रियता पाई।जैसे-श्री 420,अनाड़ी,मेरा नाम जोकर आदि।

34 लेखक ने कालजयी अवधूत शरीष को कहा है क्योंकि जैसा प्रकार अवधूत सर्दी ,गर्मी और बारिश किसी भी मौसम में शरीर की परवाह किए बगैर ईश्वर-आराधना में लगा रहता है और हृदय की कोमलता को सुरक्षित बनाए रखता है ;ठीक वैसे ही शरीष भी प्रत्येक मौसम- सर्दी ,गर्मी और बारिश किसी में भी हमेशा हरा-भरा बना रहता है ,फूलों -फलों से लकड़क बना रहता है और छोटे -छोटे पेड़ -पौधों को छाया प्रदान करता है । उसका फूल लंबे समय तक काल को पराजति कर खलि रहता है।

35 मानचित्र पर एक लकीर खींच देने से जमीन और जनता बँट नहीं जाती है-यह कथन एकदम सत्य है। 15 अगस्त 1947 को भारत-पाक का विभाजन कर दिया गया और भौगोलिक दृष्टि से दोनों देशों अलग-अलग पहचान मिल गई लेकिन दोनों मुल्कों की आम जनता आज भी दिलों से अपने को अलग -अलग नहीं मानती है। सफ़िया और सखिा बीवी आज भी लाहोर को अपना वतन मानती है तो सुनीलदास गुप्ता आज भी ढाका को अपना वतन मानता है। अटारी बार्डर पर तैनात आज भी दलिली को अपना वतन मानता है।

36 अंबेडकर के मत से मनुष्य की क्षमता तीन बातों पर निर्भर करती है-शारीरिक वंश-परंपरा,सामाजिक उत्तराधिकार तथा मनुष्य के अपने प्रयत्न। क्योंकि शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार में भिन्न -भिन्न होते हुए भी अगर वह प्रयत्न करता है तो सभी से आगे निकल सकता है और सफल हो सकता है ।

37 'सलिवर वैडगि' कहानी दो पीढ़ियों की सोच,मूल्यों और भावनाओं के अन्तराल को दर्शाती है।जैसे-वंशीधर बाबू और कशिन दा पुरानी पीढ़ी के समर्थक हैं तो वंशीधर की पत्नी और उनके बेटे-बेटी नयी पीढ़ी के समर्थक हैं।वंशीधर अपने आदर्श कशिन दा के आदर्शों पर ही चलते हैं।वे पूजा-पाठ,धर्म-उपासना,न्याय,ईमानदारी,सत्यनिष्ठा,कर्तव्य परायण तथा बुजुर्गों को सम्मान देते हैं।इसके विपरीत उनके बच्चे धन-दौलत को ही सब कुछ समझते हैं।बुजुर्गों का अपमान करते हैं,सलिवर वैडगि की पार्टी देते हैं,फ्रीज,टी वी,क्लर,रसोई गैस अर्न्त नये-नये कपड़ों को अपनी आवश्यकता मानते हैं।यशोधर बाबू के लिए ये सब 'समहाऊ प्रापर' है,क्योंकि कशिन दा भी इनके वरिधी थे।उनकी पत्नी बच्चों के साथ मिलकर खुशी मनाती है,कटलेस ब्लाऊज पहनती है और

होठों पर लाली लगाती है।ये सब भी वंशीधर को 'समहाऊ'लगतता है। बच्चे अपना मकान चाहते हैं कति यशोधर बाबू सरकारी क्वाटर में ही अपने को सुरक्षति मानते हैं।

38 चार्ली चैप्लनि की फ़िल्मिमें आज भी उतनी ही पसंद की जाती है जतिनी चार्ली के समय की जाता थी। चार्ली की फ़िल्मों ने हर एक दर्शक को अपनी ओर खींचा है और दर्शक की वर्ग-वर्ण-भेद दीवार को तोड़ा है। चार्ली सार्वकालिक और सार्वजनीन है। वह भारत में भी उतना ही लोकप्रिय है जतिनी अमरिका और यूरोप में। चार्ली की फ़िल्मिमें मूक है फ़रि भी दर्शक को बाँधे रखती है। उनकी फ़िल्मों में आम आदमी नजर आता है। करुणा और हास्य चार्ली की फ़िल्मों की मूल पहचान है।

39 चटाई का लहंगा यशोधर बाबू की पत्नी को कहा गया है क्योकविह बुढ़ापे में बच्चों के साथ-साथ आधुनिकि जीवन-शैली को अपनाती जा रही है। होठों पर लपिस्टिकि लगाना तथा ऊँची हलि के सेण्डलि पहनना आदि।

40 'जूझ' का अर्थ है-संघर्ष।यह भाव सम्पूर्ण कथा में नहिति है।कथानायक आनंद ने पाठशाला जाने के लिए संघर्ष कियो। उनके संघर्ष में उसकी माँ व देसाई राव का सहयोग शामिल है।पाठशाला में भी अपने अस्तित्व का संघर्ष करके ही वह मानीटर बन सका।उसके जीवन में गणति के अध्यापक मंत्री का सहयोग रहा।कविता लिखने,पढ़ने,गाने में सौदलगेकर का भरपूर सहयोग रहा।रात-दनि घर,खेत और पशुओं का काम करते हुए लेखक पढ़ने और कविता लिखने में सफल रहता है । अपने उपेक्षति जीवन को लेखक ने संघर्ष करके ही सार्थक बनाया जो कि आज एक मशाल है। वास्तव में आनंद का दृढ विश्वास,लगन,सहनशक्ति और कठोर मेहनत ही उसे संघर्ष की राह पर आगे बढ़ाते हुए एक पूरण सफल इंसान बनाती है।

41 लेखक के मराठी के अध्यापक मास्टर सौदलगेकर सस्वर कविता पाठ करते थे और स्वयं कविता लिखते भी थे।वे लय,ताल,छंद,यति-गित,आरोह-अवरोह का ज्ञान कराते थे।उनके मुख पर कविता के भाव देखकर लेखक प्रभावति हुआ। सौदलगेकर द्वारा लता पर लिखी गई कविता देखकर लेखक ने सोचा कि अपने गाँव,खेत,पशु-पक्षी सभी पर कविता लिखी जा सकती है।उसने तुकबंदी शुरु की।पाठशाला के समारोह में काव्यपाठ करने के बाद आनंद यादव में आत्मविश्वास के जरिए कविता लिखने की रुचि पैदा हुई।

42'जूझ' का अर्थ है-संघर्ष।यह भाव सम्पूर्ण कथा में नहिति है।कथानायक आनंद ने पाठशाला जाने के लिए संघर्ष कियो। उनके संघर्ष में उसकी माँ व देसाई राव का सहयोग शामिल है।पाठशाला में भी अपने अस्तित्व का संघर्ष करके ही वह मानीटर बन सका।उसके जीवन में गणति के अध्यापक मंत्री का सहयोग रहा।कविता लिखने,पढ़ने,गाने में सौदलगेकर का भरपूर

सहयोग रहा। रात-दनि घर, खेत और पशुओं का काम करते हुए लेखक पढ़ने और कविता लिखने में सफल रहता है। अपने उपेक्षित जीवन को लेखक ने संघर्ष करके ही सार्थक बनाया जो कि आज एक मशाल है। वास्तव में आनंद का दृढ़ विश्वास, लगन, सहनशक्ति और कठोर मेहनत ही उसे संघर्ष की राह पर आगे बढ़ाते हुए एक पूरण सफल इंसान बनाती है। अतः, 'जूझ' शीर्षक सार्थक है।

43 'जूझ' कहानी का नायक आनंदा जीवन-भर संघर्ष करता है और सफलता पाता है। उसके चरित्र की नमिनांकति विशेषताएं हमें अच्छी लगती हैं-आनंदा बचपन से ही पढ़ना-लिखना चाहता था। इस हेतु वह पति के द्वारा उपेक्षित होने पर अपनी माँ को मनाता है और देसाई सरकार का सहयोग लेकर फ़रि से पढ़ाई शुरु करता है। आनंदा कठोर मेहनती है। वह स्कूल से आने के बाद और जाने से पहले खेतों में पानी देता है, गाय-भैंस चराता है। आनंदा कक्षा में बार-बार लड़कों द्वारा छेड़े जाने पर भी पढ़ाई नहीं छोड़ता है, इसे वह अपनी नयिती मान लेता है। आनंदा स्कूल में रहकर भी गाने का शौक रखता है। मास्टर सौदलगेकर से प्रभावित होकर वह कविता लिखना सीखता है और उसे कविता के नियमानुसार तुक-लय के साथ गाता है।

44 हां, सन्धिघाटी सभ्यता जल-सभ्यता थी। उसमें मलि 700 कुएं नगर के लोगों को पीने का पानी उपलब्ध करवाते थे। खुदाई में एक विशाल स्नानागार मलि है जो नगर के लोगों के सामूहिक स्नान के आता था। यह स्नानागार उत्तरी और दक्षिणी दो हिस्सों में विभाजित है। नगर के पास बहती संधु नदी जल का स्रोत थी। नगर के जल को नगर के बाहर निकालने के लिए पक्की ईंटों से बनी नालियां मलि हैं जो नगर की सुव्यवस्था को दर्शाती हैं।

45 सन्धि सभ्यता के लोग शांत थे और संपन्नता के बावजूद सन्धि सभ्यता में न भव्य प्रासाद है और न मंदिरियाँ राजाओं की समाधियाँ भी नहीं हैं। यहाँ के औजार, मूरतशिल्प, मकान, कमरे, नाव और राजा का मुकुट तक छोटा मलि है। प्रभुत्व और दखिवा के तेवर कहीं भी दखिई नहीं पड़ते। अतः यह कहना समीचीन है कि सन्धि सभ्यता का सौंदर्य समाज पोषित था न की राज पोषित।

46 सन्धि सभ्यता के नगर की मुख्य सड़क 13 फीट चौड़ी हुआ करती थी। उससे जुड़ी छोटी-छोटी सड़कें तथा गलियां होती थीं। घरों के दरवाजे अन्दर की तरफ़ खुलते थे। घर ईंटों से बनते थे। हर घर में एक स्नानागार होता था। विशाल स्नानागार, अन्न भण्डार होते थे। छोटी नलियां बड़ी नालियों में मलिती थीं जनिसे होकर गंदा पानी नगर से बाहर जाता था। नालियां ढकी होती थीं।

47 संपन्नता के बावजूद सन्धि सभ्यता में न भव्य प्रासाद है और न मंदिरियाँ राजाओं की समाधियाँ भी नहीं हैं। यहाँ के औजार, मूरतशिल्प, मकान, कमरे, नाव और राजा का मुकुट तक छोटा



